अरुण होता

एक शिनाख़्त

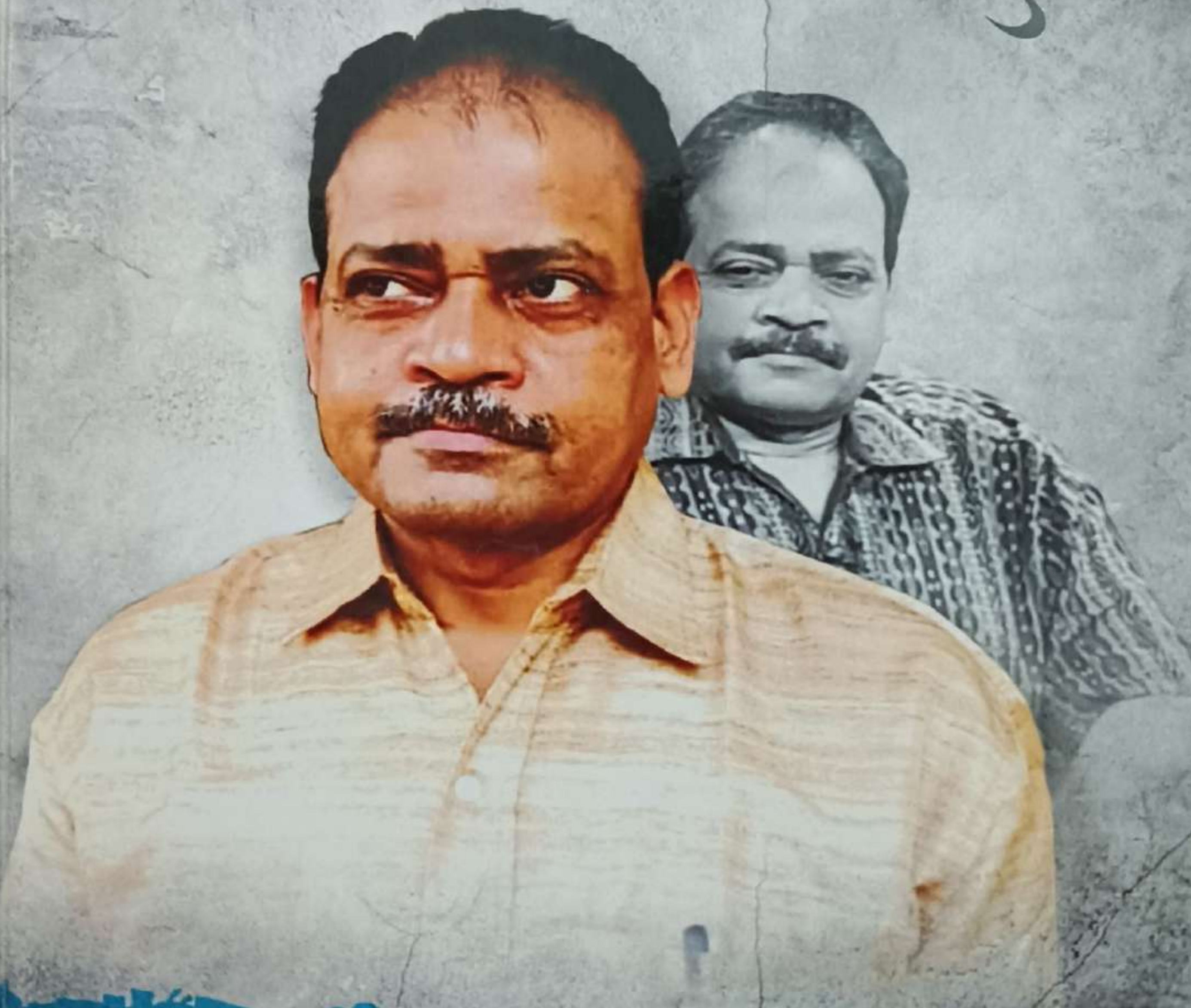

संपादन: सुलोचना दास
सह-संपादन: रीता दास
परिकल्पना : जितेंद्र पात्रो

प्रलेक व्यक्तित्व

* सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशित पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी या फोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में लिखित सामग्री लेखक के अपने विचार हैं, जिसके लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रलेक प्रकाशन

PRALEK PRAKASHAN

मुख्य कार्यालय : 702, जे-50, ग्लोबल सिटी, विरार (वेस्ट), मुम्बई, महाराष्ट्र-401303
दिल्ली एनसीआर ऑफ़िस पता : 03/सी, ज्ञान खण्ड-4 इंदिरापुरम गाजियाबाद, उ.प्र.-201014

E-mail : pralek.prakashan@gmail.com
Website : www.pralekprakashan.com
दूरभाष : +91 7021263557

अरुण होता : एक शिनाख़्त

संपादक : सुलोचना दास/ सह संपादक : रीता दास

परिकल्पना : जितेन्द्र पात्रो

Arun Hota : Ek Shinakht : Edited by Sulochna Das / Reeta Das

Hypothesis : Jitendra Patro

ISBN : 978-93-5677-03-48

प्रथम पेपरबैक संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 699/-

कॉपीराइट : **लेखक, संपादक, प्रकाशक**

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट, दिल्ली

आवरण एवं पुस्तक सज्जा : प्रलेक स्टूडियो

---

*नोट : **"एक शिनाख़्त"** प्रोजेक्ट का सर्वाधिकार **"प्रलेक पब्लिशिंग हाउस प्रा.लिमिटेड"** के पास सुरक्षित है। प्रलेक प्रकाशन का लोगो मिक्की पटेल की तूलिका से।

अनुक्रम

भूमिका : आलाचेना का मानुष मर्म : 07

परिचय : : 23

खंड क :

व्यक्तित्व मूल्यांकन

अरुण को उगते हुए देखा मैंने

–डॉ. अजय कुमार पटनायक *: 31*

प्रो. अरुण होता: आत्मीय भी विश्वसनीय भी

–जितेन्द्र श्रीवास्तव *: 33*

हिंदी आलोचना की आस : अरुण होता

–सुभाष राय *: 38*

सेवन नहीं, सेवक वाली मानसिकता

–निशान्त *: 42*

खंड ख :

कृति एवं कृतित्व मूल्यांकन

अरुण होता: एक दुर्लभ जिज्ञासु, आत्मविश्वासी, विश्वसनीय और अन्वेषी आलोचक

–दिविक रमेश *: 49*

आधुनिक साहित्य के विश्वसनीय पारखी : अरुण होता

–प्रो. अमरनाथ शर्मा *: 54*

तुलनात्मक अध्ययन की मानक कृति

–प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय *: 59*

हिंदी समाज में उड़िया के दूत हैं अरुण होता

–कृपाशंकर चौबे *: 64*

अरुणा होता हिन्दी आलोचना में एक सार्थक उपस्थिति
-संजय कुमार सिंह : 65
कहानी के समकाल को परखता आलोचक
-प्रज्ञा : 67
हिंदी और उड़िया साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
-बजरंग बिहारी तिवारी : 75
महामारी और कविता
-राकेश रेणु : 79
उड़िया और हिंदी का सेतुबंध-अरुण होता
-डॉ. आदित्य विक्रम सिंह : 81
समय की गतिकी की पहचान और आलोचकीय विवेक
-डॉ. नीलाभ कुमार : 85
डॉ. अरुण होता की आलोचना का 'प्रमेय'
-मृत्युंजय पाण्डेय : 90
तुलना और विश्लेषण के मध्य आलोचक अरुण होता
-शैलेन्द्र कुमार शुक्ल : 98
'अपनी भाषा की लोक यात्रा': भाषा विमर्श की एक पहल
-प्रदीप कुमार ठाकुर : 105
ओडिया की प्रगतिशील कहानियाँ
-डॉ.रमेश तिवारी : 112
समय से संवाद करती कृति
-पीयूष कुमार : 117
आलोचना का नीलकुसुम
-सुलोचना दास : 123
'आधुनिक हिंदी कविता युगीन संदर्भ' के बहाने आधुनिक काल के कवियों की सार्थक पड़ताल
-डॉ. एकता मंडल : 134
'तिमिर में ज्योति जैसे'
-अनिल पांडेय : 153
समकाल के यथार्थ का लेखा-जोखा
-डॉ. कल्पना पन्त : 155

भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद पर सुविज्ञ आलोचक अरुण होता की दृष्टि
-डॉ.रंजना जायसवाल : *169*

ब्रजबुलि और उसकी साहित्यिक सम्पदा का परिचय
-डॉ. सरोज कुमारी शर्मा : *177*

समकालीन आलोचना का सामाजिक चेहरा
-विनीता सिंह : *183*

समकालीन आलोचना के आकाश का अरुण : डॉ. अरुण होता
-प्रियंका कुमारी सिंह : *189*

साहित्य और समाज के प्रति अरुण होता की दृष्टि
-डॉ. मीरा साव : *201*

हिन्दी भाषा के विकास में अपनी भाषा और साहित्य के जरिये प्रो.अरुण होता का साहित्यिक अवदान
-शम्भु नाथ मिश्र : *204*

समकालीन कविता का साक्षात्कार करने वाली पुस्तक : कविता का समकालीन प्रमेय
-शगुफ़्ता यास्मीन : *210*

तुलनात्मक साहित्य: हिंदी और उड़िया के परिप्रेक्ष्य में-एक मूल्यांकन
-श्वेता वर्णवाल : *221*

अरुण होता की मूल्य दृष्टि
-परमजीत कुमार पंडित : 230

खंड ग :
छात्र-छात्राओं के लिए अरुण होता

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय'
-शकुंतला पंडित : *247*

वट वृक्ष
-रुद्रकांत झा : *249*

एक शिक्षक के रूप में प्रोफेसर अरुण होता
-श्वेता शर्मा : *256*

ज्ञान का अरुण
-अमित साव : *259*

एक अद्‌भुत व्यक्तित्व से गुजरते हुए
-मनोज कुमार : 261
अरुण होता की उपस्थिति का अर्थ
-अरुण कुमार तिवारी : 265

खंड घ :

कुछ प्रतिनिधि आलेख

बाज़ार और साहित्य : एक आलोचकीय कथोपकथन : 271
काशीनाथ सिंह की कहानियों में अभिनवता : 291
रेणु की अलक्षित कहानियाँ : युग-संदर्भ और कथा-दृष्टि : 297
भूमंडलीकरण के दौर में अखिलेश की कहानियाँ : 314
समकालीन स्त्री कथाकारों के सरोकार : 328
परंपरा के सर्जक कवि केदारनाथ सिंह : 345
'कुछ नहीं है जीवन से ज़्यादा सुंदर, जीवन से ज़्यादा प्यारा जीवन की तरह अमर' : 372
आँखें अब भी देखती हैं लहलहाती फसलों का सपना : 391
उम्मीद की फसल लहलहाती है उजाले का साथ पाकर : 413
अस्तित्व, अस्मिता और सहजीविता की संघर्ष गाथा : 437
हाशिए की नारी : उत्तर औपनिवेशिक बांग्ला कवयित्रियों के संदर्भ में : 447
ओड़िया दलित कविता : स्रोत, परंपरा और प्रतिरोध चेतना : 460

खंड ङ :

- दरअसल भूमंडलीकरण 'भूमंडीकरण' में तब्दील हो गया है
  -आलोचक अरुण होता से पत्रकार रीता दास की बातचीत : 475

अन्त में...

- आलोचक की कुछ कविताएँ : 483
- अख़बारों की कतरन : 486